मंथन के मोती – पंचम प्रतियोगिता

दोहा लेखन – ''नारी तेरे रूप अनेक''

दीप से दीप जगमगा रहे हैं और सुलेखा समिति की पंचम प्रतियोगिता 'दोहा लेखन – नारी तेरे रूप अनेक' के परिणाम का आलोक फैल गया है। परिणाम यह बताते हैं कि माहेश्वरी समाज की बहू–बेटियों में चिन्तन – मनन की अद्‌भुत शक्ति है जो लेखन के माध्यम से नव अंकुरों की तरह प्रस्फुटित हो रही है और पूरे देश के माहेश्वरी परिवारों को सौरभ दे रही है। इस प्रतियोगिता का उद्‌घोष जनवरी 2018 के द्वितीय सप्ताह में हुआ था। सभी ने विषय का सहर्ष स्वागत किया। समय की प्रतिबद्धता का दृढ़ संकल्प इस बार भी सिद्ध हुआ। 10 मार्च तक 26 राज्यों से 78 रचनाएँ हम तक पहुँची। राष्ट्रीय निर्देशों के आधीन इन रचनाओं का अंकन हुआ। विचारों के मंथन से दोहा रूपी जो मक्खन प्राप्त हुआ है, वह निश्चित ही समाज के लिए मंगलमय, हितमय होगा।

जैसे शरद पूणम के चाँद को देखकर लहरें मचलती है, वैसे ही नारी के अनेक रूपों को देखकर भावाभिव्यक्ति 2–2 पंक्तियों के दोहों में लहराने लगी। इन लहरों में नारी के विभिन्न रूपों का, गुणों का वर्णन है जो यह बता रही है कि ऐश्वर्यशालिनी नारी अभिनव रूपधारिणी है। जितनी है वह उज्जवल, उतनी ही है प्रबल। नारी भक्ति भी है, और शक्ति भी। वह महान चरित्र भी है, अपलक चित्र भी। मातृत्व की मूर्ति और सौन्दर्य की स्वप्नयामिनी नारी फूल से कोमल भी है और वज्र से कठोर भी। मेनका बन तप भंग करने वाली नारी कभी वात्सल्य और ममता की मूरत बन यशोदा बनती है तो कभी द्रोपदी के रूप में पुरूष प्रधान समाज में अपनी तेजस्विता का प्रखर पाठ पढ़ाती है। आगे चलकर शौर्य और साहस की धरोहर रजिया सुल्तान बनती है तो 20वीं सदी में मानव कल्याण की नई मशाल मदर टैरेसा बनकर अनेक दुखियों के घर संजीवनी रोशनी फैलाती है। आधुनिक

कीर्तिमान अंतरिक्ष को संभालने और नापने की हैसियत रखने वाली कल्पना चावला जैसा हौसला आज अनेक नारियों में अनेक क्षेत्रों में तरंगित है। वास्तव में मनुष्यता के असली मर्म और कर्म हेतु नारी ही प्रथम और अंतरिक परिक्रमा है। उसके विलक्षण तत्व और अदभुत झाकियाँ इन दोहों में परिलक्षित है।

कुछ त्रुटियाँ भी रहीं जिसका आकलन भावी सुधार के लिए अनिवार्य है। अनेक दोहों में कामायनी की पंक्तियाँ कापी की गई है। अनेकों ने दोहे 3–3 पंक्तियों में लिखे। कई दोहे शब्द सीमा को तोड़ते हुये बहुत लम्बे हो गए हैं, जिसमें एक–एक पंक्ति में 14–16 शब्द थे। प्रसन्नता की बात यह भी रही कि अनेक दोहों में 11–13 मात्राओं का पूरा ध्यान रखा गया। अनेक दोहों में नारी के असंख्य गुणों का वर्णन था, किन्तु उसके विविध रूपों पर उद्‌गार नहीं थे। व्याकरण की त्रुटियाँ भी रहीं। अभिव्यक्ति में मौलिकता का अभाव भी रहा। इन्हीं कारणों से श्रेष्ठ रचनाएँ भी चयनित परिणाम में स्थान नहीं पा सकी। किन्तु इससे लेखन की प्रक्रिया बाधित नहीं होनी चाहिये। ये गंगा के प्रवाह की तरह आगे ही आगे बढ़ती रहे।

सुलेखा समिति राष्ट्रीय नेत्रृत्व का विशेष आभार प्रकट करती है जो सदैव हमारा पथ प्रशस्त करती रही हैं। राष्ट्रीय पदाधिकारियों के प्रति हम कृतज्ञप्ता ज्ञापित करते हैं। प्रबुद्ध, निष्पक्ष निर्णायक मण्डल को अनेक धन्यवाद। सभी प्रदेश अध्यक्ष, सचिव एवं समस्त पदाधिकारी गण के प्रति मैं विशेष आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने समय सीमा में रहकर रचनाएँ हम तक प्रेषित की। सुलेखा समिति की सभी संयोजिकाओं का भी मैं अभिनन्दन करती हूँ कि जिन्होंने उसी तत्परता के साथ इस बार भी चयन प्रक्रिया का कार्यभार सम्भाला। इस प्रकार सभी के उत्साह से दोहा लेखन प्रतियोगिता का मंगल कार्य सम्पन्न हुआ है। जो परिणाम घोषित हुए हैं उसके पीछे सशक्त कार्य प्रणाली का पूरा तारतंत्र है।

सभी को नमन् करते हुए,
सुलेखा राष्ट्रीय संयोजिका
प्रभा जाजू (नौएडा)